ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आज ज्योति महोत्सव
महासम्पर्क अभियान
महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जयंती के अवसर पर न्यूनतम 200 महानुभावों से संपर्क करने का संकल्प लीजिए
अपने मोबाइल में एप्प डाउनलोड करें Google Play

वर्ष 47, अंक 33 | एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 1 जुलाई, 2024 से रविवार 7 जुलाई, 2024
विक्रमी सम्वत् 2081 | सृष्टि सम्वत् 1960853125
दयानन्दाब्द : 201 | पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये | दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का 15 दिवसीय राष्ट्रीय शिविर सम्पन्न

13 प्रांतों के 24 व्यायाम शिक्षक, 55 उप व्यायाम शिक्षक, 60 शाखा नायकों सहित सैकड़ों आर्यवीरों ने लिया भाग

शाखा संचालन, वृक्षारोपण और पंच महायज्ञों का पालन करें शिक्षकगण - आचार्य स्वामी देवव्रत सरस्वती

2025 में 150वें स्थापना दिवस के अतर्राष्ट्रीय आयोजनों में आर्यवीरों की रहेगी अहम भूमिका - सत्यवीर आर्य

वर्तमान परिस्थितियों में आर्य समाज की युवा शक्ति एक आशा की किरण - विनय आर्य

आर्य समाज की मान्यताओं और परंपराओं के अनुसार प्रत्येक मनुष्य ईश्वर की संतान है। सबको अपने कल्याण के लिए शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक रूप से संक्षम होना ही चाहिए। इसके लिए सार्वदेशिक आर्यवीर दल के निर्देशानुसार संपूर्ण भारत में प्रांतीय और क्षेत्रीय स्तरों पर आर्यवीर दल द्वारा मई-जून में अवकाश के दिनों में चरित्र निर्माण और आत्मरक्षा को ध्यान में रखते हुए अनेक विशेष प्रशिक्षण शिविर लगाये गए हैं। गत वर्षों कभी भांति इस वर्ष भी सार्वदेशिक आर्यवीरदल के तत्वावधान में 2 जून से 16 जून तक गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, फरीदाबाद के प्रांगण में राष्ट्रीय शिविर उमंग, उत्साह और उल्लास के वातावरण में संपन्न हुआ। शिविर के अध्यक्ष आचार्य स्वामी देवव्रत जी, प्रधान संचालक, श्री सत्यवीर आर्य जी और शिविर के व्यवस्थापक आचार्य ऋषिपाल जी, के निर्देशन में पूरे भारत से आये सैकड़ों आर्यवीरों ने अपने जीवन को तप, त्याग, स्वाध्याय और संयम से तपाकर सुदृढ़ किया। शिविर में भाग लेने वाले सभी आर्य वीरों की आदर्श दिनचर्या, योगासन, प्राणायाम, व्यायाम, संध्या, हवन, बौद्धिक, शास्त्र परिचय, राष्ट्र भक्ति, वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों की शिक्षा के साथ भजन, संगीत आदि की कक्षाएं नियमित रूप से चलाईं गई। परिणाम स्वरूप सभी आर्यवीर शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक रूप से मजबूत हुए।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में 2 जून से 16 जून सार्वदेशिक तक आर्य प्रतिनिधि सभा एव गुरुकुल की प्रबन्ध समिति द्वारा महर्षि

- शेष पृष्ठ 7 पर

हाथरस में मौत के सत्संग का जिम्मेदार कौन?

आर्य समाज के संस्थापक, महान समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने 150 वर्ष से भी पहले ढोंग, पाखण्ड, अंधविश्वास और गुरुडम के विरुद्ध आवाज उठाकर मानव समाज को जागृत किया था। अगर महर्षि दयानन्द का वैदिक सन्देश मानव समाज द्वारा पूरी तहर से अपना लिया जाता तो शायद आज हाथरस जैसा मौत का सत्संग न होता। आर्यसमाज अह्वान करता है कि - **पाखण्ड और अंध विश्वास को छोड़कर आओ लौट चलें वेदों की ओर।**

हाथरस सत्संग में मरने वाले मृतकों को भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

IAS/IPS/FRS जैसी उच्च प्रतियोगी परीक्षाओं की कोचिंग में निरन्तर अग्रसर-आर्य प्रतिभा विकास संस्थान

भारतीय सिविल सेवा की प्रारम्भिक परीक्षा में संस्थान के 12 छात्र सफल

सभी सफल प्रतिभागी छात्रों को बधाई, शुभकामनाएं एवं आशीर्वाद - सुरेन्द्र कुमार आर्य, प्रधान

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की प्रेरणाओं के अनुरूप आर्य समाज पिछले 150 वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाता रहा है। आर्य समाज के माध्यम के संचालित गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, आर्य विद्यालय, डीएवी संस्थान इसके सशक्त प्रमाण हैं। आर्य समाज की संस्थाओं से शिक्षा प्राप्त करके असंख्य विद्यार्थी जहां एक ओर भारतीय संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों का संरक्षण और संवर्धन कर रहे हैं, वहीं भारत राष्ट्र का विश्व में भी नाम रोशन कर रहे हैं।

शिक्षा सेवा के इस वृहद् क्रम में आर्य समाज द्वारा स्थापित आर्य प्रतिभा विकास संस्थान एक अनुपम संस्था है। आर्य प्रतिभा विकास संस्थान के माध्यम से आज लगभग 38 विद्यार्थी सफलता प्राप्त कर भारत राष्ट्र के उत्थान हेतु उच्च पदों पर आसीन होकर ऐतिहासिक सेवाए दे रहे हैं। अत्यंत प्रसन्नता और हर्ष का विषय है कि विद्यार्थियों को मिल रही सफलता के इस क्रम में वर्ष 2024-25, यूपीएससी (सिविल) सेवा के प्रारंभिक परीक्षा परिणमा में आर्य प्रतिभा विकास संस्थान के 12 विद्यार्थियों ने सफलता प्राप्त करके एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है।

यू.पी.एस.सी. प्रारम्भिक परीक्षा-2024-25 में सफलता प्राप्त आर्य प्रतिभा विकास संस्थान के छात्रों में-

1. अंकुश पुंबा (जम्मू, जम्मू-कश्मीर),
2. प्रद्युम्न बिजलवान (उत्तराखण्ड),
3. शिवम उत्तम (कानपुर, यूपी),
4. अभिजीत तोमर (सहारनपुर, यूपी),
5. रोहित गोयल (हिसार, हरि.),
6. भारतेंदु देशमुख (छत्तीसगढ़),
7. वंशिका तायल (बरनाला, पंजाब),
8. गौतम कुमार आर्य (झारखंड),
9. अभिषेक कुमार झा (बिहार),
10. रजनीकांत चौबे (कैमूर, बिहार),
11. मोहित झा (हाजीपुर, बिहार),
12. नीरज पांडे (भोजपुर, बिहार)

सम्मिलित हैं।

सभी विद्यार्थियों को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान, श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी, अखिल भारतीय दयांनद सेवाश्रम संघ के प्रधान एवं जेबीएम ग्रुप के चेयरनमैन, श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने समस्त आर्य जगत की ओर से हार्दिक बधाई और शुभकामनाए प्रदान की है। विद्यार्थियों को बधाई और सभी अधिकारियों के प्रति आभार।

देववाणी-संस्कृत

किस पाप से तेरे दर्शन नहीं होते

वेद-स्वाध्याय

पृच्छे तदेनो वरुण दिदृक्षुः उपो एमि चिकितुषो वि पृच्छम्।
समानमिन्मे कवयश्चिदाहुः अयं ह तुभ्यं वरुणो हृणीते।। - ऋ. 7/86/3
ऋषिः **वसिष्ठः**।। देवता-**वरुणः**।। छन्दः **निचृत्त्रिष्टुप्**।।

शब्दार्थ - **वरुण**=हे पापनिवारक देव! **तत् एनः पृच्छे** = मैं उस पाप को तुझसे पूछता हूँ (जिसके कारण मुझे तुम्हारा दर्शन नहीं हो पाता) **दिदृक्षुः** = मैं तुम्हारा दर्शनाभिलाषी हूँ **वि पृच्छम्** = इस विषय में विविध प्रश्न पूछने के लिए मैं **चिकितुषः** = विद्वानों के **उपो एमि** = पास जाता हूँ, परन्तु **कवयः चित्** = वे सब ज्ञानी पुरुष भी **समानं इत् में आहुः** = मुझे एक ही उत्तर देते हैं- एक ही बात कहते हैं- कि "**अयं वरुणः ह** = निश्चय से यह वरुणदेव ही **तुभ्यं हृणीते** = तुझसे अप्रसन्न है; उसे प्रसन्न कर!"

विनय-हे प्रभो! मैं तेरे दर्शन पाने के लिए व्याकुल हूँ। तुझसे साक्षात् मिलने के लिए दिन-रात प्रतीक्षा में हूँ। इसके लिए यत्न करते हुए बहुत दिन हो गये। ऐसा एक भी साधन नहीं छोड़ा जो तुझसे मिलानेवाला प्रसिद्ध हो। कठोर-से-कठोर तप बड़े आनन्द से किये हैं। तो अब कौन-सा पाप रह गया है जिससे तुम्हारे चरणदर्शन नहीं हो पाते? हे वरुण! तुमसे ही पूछता हूँ, मुझे मालूम नहीं। मुझे मालूम होता तो मैं कब का प्रतीकार कर चुका होता। हे पाप-निवारक! तुम ही मुझ दर्शन-पिपासु को वह मेरा अपराध बतलाओ जिससे अप्रसन्न होकर तुम मुझे दर्शन नहीं देते। जिन्हें मैं मनुष्यों में ज्ञानी, भक्त, विद्वान्, महात्मा देखता हूँ उन सबके पास जाता हूँ और जाकर यही पूछता हूँ कि मुझे वरुणदेव के दर्शन क्यों नहीं होते? परन्तु वे सब क्रान्तदर्शी महात्मागण भी मुझे एकस्वर से यही बतलाते हैं कि वह वरुणदेव ही तुझसे नाराज है। वे सब सच्चे ज्ञानी मुझे यही एक उत्तर देते हैं। तो, हे देव! या तो मेरा पाप मुझे दिखला दो, अपनी अप्रसन्नता का कारण बतला दो, नहीं तो मुझे दर्शन दे दो। हे मेरे स्वामिन्! जब मुझे अपने पाप का पता ही न लगेगा तो मैं उसका प्रतीकार कैसे कर सकूँगा? मैं तुम्हें प्रसन्न करके छोड़ूँगा। अपने पापों के प्रतिविधात के लिए मैं घोर-से-घोर प्रायश्चित्त करने को तैयार हूँ। अपने को पूरी तरह पवित्र कर डालने के लिए आज मैं क्या नहीं कर डालूँगा! मैं अब तुझसे मिल जाने के लिए व्याकुल हो उठा हूँ। इसलिए, हे अन्तर्यामी प्रभो! मैं तुझसे अपने पापों को जानना चाहता हूँ। मेरे पापों के सिवाय इस संसार में और कोई वस्तु नहीं है जो अब मुझे तुमसे मिलने से रोक सके।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

पुत्र से मुखाग्नि के चक्कर में बेटियों की हत्या!

बेटे की चाहत : अंधविश्वास, अपराध और कारोबार

दो छोटी-छोटी मासूम सी गुडिया जुड़वाँ पैदा हुई थी। 21 दिन की थी उनका पिता उन बच्चियों को ननिहाल से अपने घर ले आया। बच्चियों की मां तो मायके में थी। वो नहीं जानती थी कि उसका पति दोनों बेटियों के साथ क्या करने ले गया है। हैवान बने पिता ने बच्चियों को दो दिन तक पीने के लिए दूध की एक बूंद तक नहीं दी तो उनकी मौत हो गई। फिर उसने पत्नी को बिना बताए बच्चियों को दफना दिया। मामला देश की राजधानी दिल्ली के सुल्तानपुरी स्थित पूठ कलां गांव का है।

ये आज के भारत की कहानी है, उस भारत की जहाँ कन्या को देवी स्वरूपा समझा जाता है। लेकिन लालसा बेटा पैदा होने की रहती है। यह लालसा कदम-कदम पर हत्या, अपराध और शोषण को जन्म तक देती रहती है। कुछ समय पहले अलीगढ़ में बेटे की चाहत में एक महिला तांत्रिक के पास गई। उसे लगा कि किसी तन्त्र-मन्त्र से बेटा नसीब हो जाये। तांत्रिक ने महिला का जमकर यौन शोषण किया। उसकी अस्मत से लेकर घर का रुपया पैसा सब कुछ जमकर लूटा।

ऐसे ही उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ में एक पढ़े लिखे यहाँ तक कि डॉक्टर पिता ने अपनी 15 दिन की बेटी को जान से मार दिया। हैरान करने वाली बात यह है कि डॉक्टर ने तंत्र-मंत्र और जादू-टोना की वजह से नवजात की जान ले ली। किसी ने डॉक्टर को बताया था कि तंत्र-मंत्र के जरिए बेटे की कमी को पूरा किया जा सकता है लेकिन पहले अपनी 15 की बेटी की हत्या करनी पड़ेगी।

ऐसे ही यू.पी. के दादरी में बेटे की चाहत में 3 बेटियों की मां एक तांत्रिक के चंगुल में फंस गई। ये तांत्रिक भी महिला का लगातार शोषण करता रहा। इतना ही नहीं उत्तर प्रदेश के गोंडा जिले में बेटे की चाहत ने एक परिवार को हैवान बना दिया कि तांत्रिक के कहने पर परिवार ने पड़ोसी की ही 22 माह की बच्ची की बलि दे दी।

मामले यहाँ तक नहीं रुकते, बिहार के बक्सर से तो एक बाप अपनी सगी बेटियों से 10 सालों तक रेप करता रहा है। क्योंकि आरोपी पिता तांत्रिक के बहकावे में आकर अपनी बेटियों को अपने हवस का शिकार बना रहा था। वहीं पीड़िता की मां और चाची भी इस गुनाह में शामिल थी।

घटनाएँ केवल उत्तर भारत तक सीमित नहीं है बल्कि कुछ समय पहले कर्नाटक में चिक्कबल्लापुरा जिले के एक गांव में बेटा नहीं होने से दुखी एक महिला ने अपनी तीन नाबालिग बेटियों के साथ कथित रूप से कुएं में कूद कर खुदकुशी कर ली। 25 वर्षीय नागाश्री ने अपनी तीन बेटियों नव्याश्री, दिव्याश्री और दो महीने की एक बेटी के साथ अपनी जान दे दी थी। नागाश्री पर बेटा पैदा करने का पारिवारिक दबाव था और बेटे को जन्म नहीं देने की वजह से वह दु:खी रहती थी।

ऐसे एक नहीं हजार अपराध हैं और इन सभी अपराधों की एक जड़ है अन्धविश्वास। कई बार इन्सान भले ही अंधविश्वास से बचना भी चाहे लेकिन हमारे इर्द-गिर्द जमा समाज उसकी ओर धकेल ही देता है। दो जुड़वाँ 21 दिन की बच्चियों की हत्या का मामला भले ही पुलिस के लिए केस, उनकी माँ लिए के विपदा और अख़बारों के लिए एक खबर हो, लेकिन 21वीं सदी के भारतीय समाज के मुंह पर तमाचा है।

ये सभी चीजें एक ही सवाल छोड़ती नज़र आती हैं जो हमेशा से समाज के गले में डाला गया है कि 'बेटे के हाथों पिण्डदान न हो तो मोक्ष नहीं मिलता। जब तक चिता को बेटा मुखाग्नि नहीं देता, आत्मा को मुक्ति नहीं मिलती। अंधविश्वास की नगरी में

.....कई बार इन्सान भले ही अंधविश्वास से बचना भी चाहे लेकिन हमारे इर्द-गिर्द जमा समाज उसकी ओर धकेल ही देता है। दो जुड़वाँ 21 दिन की बच्चियों की हत्या का मामला भले ही पुलिस के लिए केस, उनकी माँ लिए के विपदा और अख़बारों के लिए एक खबर हो, लेकिन 21वीं सदी के भारतीय समाज के मुंह पर तमाचा है।..... ये सभी चीजें एक ही सवाल छोड़ती नज़र आती हैं जो हमेशा से समाज के गले में डाला गया है कि 'बेटे के हाथों पिण्डदान न हो तो मोक्ष नहीं मिलता। जब तक चिता को बेटा मुखाग्नि नहीं देता, आत्मा को मुक्ति नहीं मिलती। अंधविश्वास की नगरी में पितरों का उद्धार करने के लिए मोक्ष के लिए पुत्र की अनिवार्यता मानी गई है। ऐसी मान्यता है कि पुत्र के हाथों पिण्डदान होने से ही प्राणी मोक्ष को प्राप्त करता है। इस वजह से हमारे समाज में एक धारणा बनी हुई है कि जिसके बेटा नहीं होता उसे अभागा तक समझा जाता है। .....

पितरों का उद्धार करने के लिए मोक्ष के लिए पुत्र की अनिवार्यता मानी गई है। ऐसी मान्यता है कि पुत्र के हाथों पिण्डदान होने से ही प्राणी मोक्ष को प्राप्त करता है। इस वजह से हमारे समाज में एक धारणा बनी हुई है कि जिसके बेटा नहीं होता उसे अभागा तक समझा जाता है।

पिछले कुछ सालों में भले ही कानून के डंडे के डर से "शर्तिया लड़का ही होगा" वाले हकीम भूमिगत होकर अपना व्यापार चला रहे हों, लेकिन पांच-सात साल पहले तक सड़कों के आसपास दीवारों, चौराहों, खेतों में बने ट्यूबवेल के कमरों, आदि पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा होता था "शर्तिया लड़का ही होगा"। हालाँकि ये व्यापार अभी पूर्णतया बंद नहीं हुआ। अभी भी लड़का पैदा करने के कई नुस्खे भी काम में लिए जाने लगे हैं। शातिर लोग तो इस चीज के विशेषज्ञ बने बैठे हैं और बड़े-बड़े पढ़े लिखे लोग लड़के की चाहत में इनकी सेवाएं लेने से नहीं चूकते।

इनका खेल केवल संभावना के सिद्धान्त के आधार पर चलता है। जब इनकी दवा के प्रयोग के बाद लड़का पैदा हो जाता है तो यह उसे एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करते हैं। मोटी रकम वसूल करते हैं और जब परिणाम विपरीत आता है तो दवा के प्रयोग करने में गलती होना बताकर या उसकी किस्मत खराब बताकर सारा दोष प्रयोग करने वाली महिला का बता देते हैं। जब सब प्रयासों के बाद भी लड़का पैदा नहीं होता तो महिला अपने आपको कोसती है और कई बार तो कुछ कर्नाटक की नागाश्री जैसे भी कदम उठा देती हैं तो कुछ बंगाली बाबाओं, तांत्रिकों के चंगुल में फंसकर रह जाती है।

- जारी पृष्ठ 7 पर

बाल बोध

कैसे सम्भव होगा अच्छी आदतों का निर्माण?

.....अपराधी मानसिकता का जन्म भी कहीं-न-कहीं घर की प्रथम पाठशाला से ही आरंभ होता है। जो भी आज समाज में अपराधी बनकर खड़े हैं वो भी तो किसी-न-किसी के संतान होंगे? उन्हें भी तो किसी न किसी ने पाला-पोसा होगा? यहां पर एक बात और विचारणीय है कि कोई भी माता-पिता चाहे वे कितना भी बड़ा अपराधी मानसिकता का क्यों न हो लेकिन वह अपनी संतान को अपराधी कभी भी बनाना नहीं चाहता। यहां तक कि एक शराबी और जुआरी आदमी भी अपने बच्चों को इन दुर्गुणों से बचाकर रखना चाहता है। फिर क्यों इतने अपराधी समाज में लगातार पैदा हो रहे हैं। इसका सबसे बड़ा कारण है वातावरण। आज घर, परिवार, समाज, देश और दुनिया का वातावरण ही कुछ ऐसा बन गया है या बनता जा रहा है कि जिसमें जाने-अनजाने दोनों तरह से अपराध के वृक्ष पनपते जा रहे हैं। चाणक्य का वचन है कि चाहे कोई व्यक्ति अपने जीवन में अकेला ही क्यों न रहे लेकिन बुरी संगति में कदापि न रहे। अपराधियों का जन्म गलत संगति से इतनी जल्दी होता है कि जैसे फसल के बीच खरपतवार उगता और बढ़ता चला जाता है। .....

प्रकृति में नित-नये परिवर्तन घटित होते रहते हैं। पुराने पत्ते टूटते हैं, नयी कोपलें पूफटती हैं, नदी की जलधारा हमेशा नूतन-नवीन होकर बहती है। मौसम बदलते हैं, सर्दी-गर्मी, बरसात-वसंत आदि ऋतुओं का आवागमन चलता रहता है। प्रकृति में हो रहे इन परिवर्तनों को मनुष्य लगातार देखता है, ये परिवर्तन मनुष्य को आकर्षित भी करते हैं, अच्छे भी लगते हैं। प्रकृति के इन परिवर्तनों से मनुष्य के शरीर का तापमान भी घटता और बढ़ता है, सर्दी-गर्मी, बरसात तथा वसंत ऋतु के अनुसार शरीर की स्थितियां भी परिवर्तित होती हैं। किंतु इन बाहर प्रकृति के परिवर्तनों से मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्तियों में, उसके अंत:करण में बदलाव नहीं आता। जैसे कोई वृक्ष के पत्तों को पानी से गीला करता रहे और उसकी जड़ सूखी पड़ी रहे तो फिर वृक्ष का हरा-भरा रहना मुश्किल है। जैसे पेड़-पौधें को हरा-भरा रखने के लिए जड़ों को सींचना जरूरी होता है, वैसे ही व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और दुनिया में बदलाव लाने के लिए बाहर से नहीं आंतरिक वैचारिक परिवर्तन से ही बदलाव संभव होता है।

मानव समाज में अच्छे बदलाव के प्रयास आज से ही नहीं बल्कि बहुत प्राचीन समय से नित नये-नये परिवर्तनों की कोशिशें की जाती रही हैं। समाज में कुछ नया बदलाव आए? कोई नया परिवर्तन आए? समय-समय पर यहां कोई-न-कोई व्यक्ति समाज को बदलने के लिए भाषण भी दे रहा होता है कि समाज को बदलिए। कोई कहता है कि पूरे देश की शासन व्यवस्था को बदल देना चाहिए। लेकिन उन बोलने वालों की टोपियां रोज बदलती हैं, उनके झंडे रोज बदलते हैं, लेकिन खोपड़ी किसी की भी कभी नहीं बदलती, अंदर सब वैसे का वैसा ही रहता है, क्यों? क्योंकि ये जितने भी प्रयास होते हैं, सब बाहर-बाहर से ही होते हैं। इन लोगों की हालत बिलकुल वैसी है, जैसे किसी जादूगर ने अपने जादू से चूहे को शेर बना दिया, अब वह शेर तो बन गया लेकिन जैसे ही उसने बिल्ली को देखा तो वह भाग खड़ा हुआ। अब शेर बिल्ली को देखकर भाग रहा है तो जादूगर भी हैरान और वहां जो अन्य लोग खड़े थे, वे भी आश्चर्य में पड़ गए। वहां तमाशा देखने वाले लोगों ने जादूगर से कहा कि छोटे को बड़ा आकार देने वाली विद्या तो तुमने सीख ली, छोटे शरीर को बड़ा आकार तो दे दिया लेकिन अभी शरीर को ही बड़ा आकार देना सीखा है। अंत:करण का आकार बदलना नहीं सीखा, ये चूहा शरीर से तो शेर बन गया है, शेर जैसा दिखाई भी दे रहा है, लेकिन अंदर से यह शेर नहीं बना है। जो अंदर से शेर हो जाए तो फिर बाहर से शेर बने या न बने लेकिन वह भीतर से कमाल का शेर बन जाता है। एक भजन के बोल है-

आदत बुरी संवार ले, बस हो गया भजन
मन की तरगें मार ले, बस हो गया भजन

भजन की इन दो पंक्तियों का यही संदेश है कि बुरी आदतों को छोड़ कर अच्छाई को धारण कर लेना ही अपने आपमें भजन अर्थात सच्ची ईश्वर भक्ति है। जबकि मन के अंदर जो अनगिनत इच्छाओं की तरंग उत्पन्न होती है उनको काबू में कर लेना भी अपने आपमें एक उत्तम साधना है। लेकिन यह चीजे कहने-सुनने से संभव नहीं होती। मनुष्य के सारे गुणों के ऊपर उसका स्वभाव आ करके बैठ जाता है जबकि किसी का भी अच्छा या बुरा स्वभाव एक दिन में ही नहीं बन जाता। स्वभाव के पीछे होती हैं आदमी की सोच और उसकी आदतें। आदतें भी एक दिन में पक्की नहीं होती बल्कि धीरे-धीरे ये अपनी जड़ें जमाती है। पर जब आदतें मजबूत और पक्की हो जाती हैं तो फिर आदमी आदतों का ऐसा गुलाम हो जाता है कि फिर उसके चाहने न चाहने का भी कोई असर नहीं होता। आदतें उसको जबरन खींचकर वही दोहराने के लिए मजबूर कर देती हैं जो उसके उत्थान या पतन का कारण सिद्ध होता है।

कैसे होता है आदतों का निर्माण

अच्छी या बुरी आदतों का निर्माण बचपन से ही आरंभ होता है और आदतें केवल भाषण देने से अथवा जोर जबरदस्ती से सिखाने से कभी भी निर्मित नहीं होती। इसके लिए तो उदाहरण प्रस्तुत करना पड़ता है। आजकल समाज में बच्चों को समय-समय पर माता-पिता इत्यादि कहते सुने जाते हैं कि तू तो हमारी नाक कटाएगा, तू बुद्धु है, तेरे अच्छे नंबर नहीं आएंगे, तू तो कहीं चौकीदारी करेगा, इस तरह के के शब्दों से बच्चों का उज्ज्वल भविष्य नहीं होता। प्रताड़ना कभी प्रेरणा नहीं बनती, बच्चे तो देखकर ही सीखते हैं। जैसा वे अपने माता-पिता, भाई-बंधु और परिवार वालों को करते हुए देखते है वहीं उनकी आदतों में शुमार हो जाता है। इसलिए हमें आज यह सोचना होगा कि हम अपने बच्चों को क्या सिखा रहे हैं। बचपन में पड़ी हुई बुरी आदतों को जवानी में छुड़ाना बड़ा कठिन होता है। इसलिए हमें यह समझना होगा कि हम अपने बच्चों को वहीं सिखाएं, वहीं बताएं और वही दिखाएं जो उनके भविष्य के लिए उचित हो। आदतों को अगर गहराई से देखा जाए तो पशु-पक्षी भी अपने आदतों के गुलाम हो जाते हैं। पिंजरे का तोता आजाद करने के बाद भी पिंजरे में ही आकर बैठता है। अभ्यास से पका हुआ घोड़ा अपने मालिक के घर स्वयं पहुंच जाता है। तो जब पशुओं की यह स्थिति है तो मनुष्यों का क्या कहना? बहुत दिनों तक बीड़ी-सिगरेट आदि मादक नशों की आदत पड़ जाने के बाद आदमी न चाहते हुए भी उन्हें किए बिना नहीं रह पाता। बहुत दिनों तक जेल में रहने वाला कैदी एक दिन जेल को ही पसन्द करने लगता है। इसलिए बचपन में ही माता-पिता द्वारा बच्चों के सामने ऐसा प्रस्तुत किया जाए, जिससे वे अच्छे पुत्र, अच्छे पिता, अच्छे पति और देश के अच्छे नागरिक बने।

समाज में बढ़ती अपराधिक मानसिकता

आधुनिक परिवेश में चारों तरफ एक ही आवाज सुनाई देती है कि सख्त से सख्त कानून बनाया जाए। जबकि लगातार नए-नए कठोर कानून बनाए भी जा रहे हैं। लेकिन फिर भी क्या क्राइम कम होता दिखाई दे रहा है? बल्कि लगातार बढ़ता ही जा रहा है। इसके अनेक कारण हो सकते हैं लेकिन सबसे बड़ा कारण है अपराधी मानसिकता। अपराधी मानसिकता का जन्म भी कहीं-न-कहीं घर की प्रथम पाठशाला से ही आरंभ होता है। जो भी आज समाज में अपराधी बनकर खड़े हैं वो भी तो किसी-न-किसी के संतान होंगे? उन्हें भी तो किसी न किसी ने पाला-पोसा होगा? यहां पर एक बात और विचारणीय है कि कोई भी माता-पिता चाहे वे कितना भी बड़ा अपराधी मानसिकता का क्यों न हो लेकिन वह अपनी संतान को अपराधी कभी भी बनाना नहीं चाहता। यहां तक कि एक शराबी और जुआरी आदमी भी अपने बच्चों को इन दुर्गुणों से बचाकर रखना चाहता है। फिर क्यों इतने अपराधी समाज में लगातार पैदा हो रहे हैं। इसका सबसे बड़ा कारण है वातावरण। आज घर, परिवार, समाज, देश और दुनिया का वातावरण ही कुछ ऐसा बन गया है या बनता जा रहा है कि जिसमें जाने-अनजाने दोनों तरह से अपराध के वृक्ष पनपते जा रहे हैं। चाणक्य का वचन है कि चाहे कोई व्यक्ति अपने जीवन में अकेला ही क्यों न रहे लेकिन बुरी संगति में कदापि न रहे। अपराधियों का जन्म गलत संगति से इतनी जल्दी होता है कि जैसे फसल के बीच खरपतवार उगता और बढ़ता चला जाता है।

हिंसा का बीजारोपण

आजकल बचपन में बच्चों के भीतर हिंसा का बीजारोपण करने के कई सशक्त माध्यम है। टी.वी. पर दिखाए जाने वाले क्राइम पैट्रोल जैसे चैनल लड़ाई-झगड़ें और मारपीट को प्रोत्साहित करने वाले कार्यक्रम और चैनल इसके साथ-साथ दिखावट, बनावट और सजावट का बाजार, माता-पिता और परिवारजनों के द्वारा बच्चों के गिरने पर या चोट लगने पर यह कहा जाना कि इसको मारो या चींटी मर गई अथवा और अन्य कई ऐसे उदाहरण है एक-दूसरे को मारना-पीटना गाली देना अथवा अपशब्द कहना ये सब कार्यक्रम बच्चे के कोमल मन पर अंकित हो जाते है। जिसके परिणामस्वरूप वे बाद में एक बुराई का अंकुर बनकर पल्वित और पुष्पित होने लगते है। फिर मां-बाप अपना सिर पकड़कर बैठ जाते है। हमने तो ऐसा नहीं सिखाया था जो हमारे सामने ये प्रस्तुत कर रहे हैं। युगांडा के राष्ट्रपति इदि अमीन और रोम के नूरो जैसे क्रुर और जघन्य अपराधी लोगों की पृष्ठभूमि जअ मनोवैज्ञानिकों ने देखी तो वे आश्चर्य में पड़ गए। उन्हें ज्ञात हुआ कि नूरो के पिता उसकी मां को इतनी बुरी तरह से पीटते थे कि वह लहु-लुहान हो जाती है। और नीरो बचपन में उस सारे दृश्य को देखता रहता था। उसी क्रुरता से प्रेरित होकर नूरो इतना बड़ा हिंसक बना कि वह लोगों को खंबे पर बांधकर नीचे से आग जलाता था और जब वो लोग तड़पते थे तब वह वायलन बजाता था। इससे पता चलता है कि हिंसा का भाव, विचार जब आदत बनकर के सामने आता है तो कितना बड़ा विनाश सामने खड़ा हो जाता है।

- आचार्य अनिल शास्त्री

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज हनुमान रोड
नई दिल्ली-110001

प्रधान : श्री नरेन्द्र सिंह हुड्डा
मन्त्री : श्री संजय कुमार
कोषाध्यक्ष : श्रीमती रश्मि वर्मा

आर्यसमाज रोहतास नगर
शाहदरा, दिल्ली-110032

प्रधान : श्री सुखबीर सिंह त्यागी
मन्त्री : श्री विकास शर्मा
कोषाध्यक्ष : श्री सतीश कश्यप

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का राष्ट्रीय शिविर गुरुकुल कुरुक्षेत्र में सम्पन्न

गुरुकुल की पुण्यभूमि में अगले वर्ष पुनः प्रशिक्षण प्राप्त करें–आर्य वीरांगनाएं - आचार्य देवव्रत, राज्यपाल

भारत का भविष्य और विश्व की आशा हैं– आर्य वीरांगानाएं - सुरेन्द्र कुमार आर्य, चेयरमैन, जे.बी.एम. ग्रुप

शिविर में 10 राज्यों से पधारी सैकड़ों आर्य वीरांगनाओं ने प्राप्त किया प्रशिक्षण

गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरियाणा) के प्रांगण में सर्वादेशिक आर्य वीरांगना दल का शिविर 16-25 जून तक आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा एवं गुरुकुल कुरुक्षेत्र के तत्वावधान में सार्वदेशिक आर्यवीर दल न्यास के अध्यक्ष स्वामी आचार्य देवव्रत सरस्वती की अध्यक्षता में सफलता पूर्वक संपन्न हुआ। जिसमें 10 प्रान्तों की 300 आर्यवीर, शाखानायक, उपव्यायाम शिक्षक श्रेणी को शारीरिक, बौद्धिकि पाठय का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। आर्यवीरांगनाओं को सर्वांग सुन्दर व्यायाम, सूर्य नमस्कार व्यायाम, आसन, प्राणायाम तथा अत्मरक्षा के लिए लाठी, त्रिशूल, आत्मरक्षा का प्रशिक्षण दिया गया।

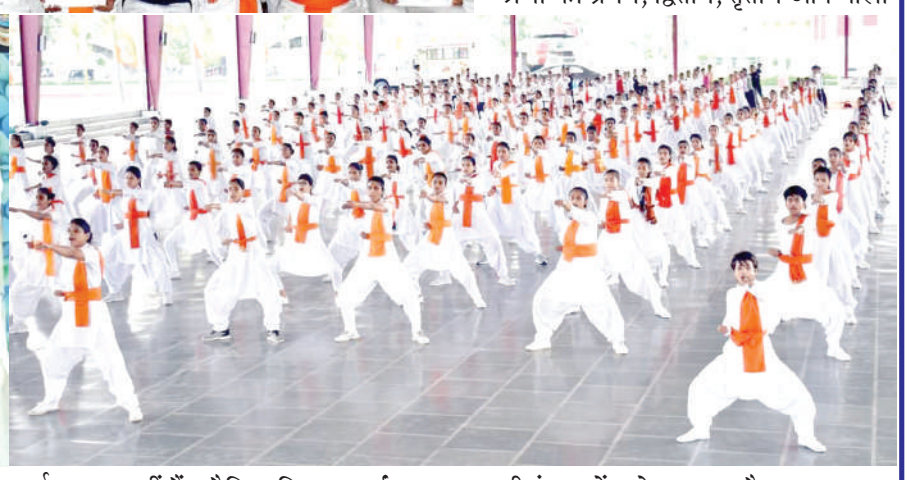

प्रतिदिन 3 घण्टे वौद्धिक ज्ञान, व्यक्तित्व विकास, अनुशासन एवं दिनचर्या का भी प्रशिक्षण दिया गया।

16 जून को सायं 4-7 बजे तक शिविर समापन के अवसर पर जय भारत मारुती लि. के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य, आचार्य सुकामा जी महिला आयोग की उपाध्यक्ष, श्री पीयूष आर्य चेन्नई आदि श्री राज कुमार आर्य, प्रधान गुरुकुल कुरुक्षेत्र, श्री सूर्य प्रकाश जी प्रधानाचार्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र एवं अन्य आर्य सज्जनों की गरिमामयी उपस्थिति सभी का आकर्षण बनी रही।

आर्य वीरांगनाओं ने आचार्य स्वामी देवव्रत सरस्वती के अध्यक्षता में यह प्रमाणित कर दिया कि लड़कियां जहाँ परीक्षाओं में प्रथम स्थान ग्रहण करती हैं, वहीं शारीरिक प्रशिक्षण में भी किसी से कम नहीं हैं। सैनिक शिक्षा, सर्वांग सुन्दर व्यायाम, लाठी, भाला, तलवार, आसन आदि के आकर्षक व्यायाम ने सबको समोहित कर दिया, उपव्यायाम शिक्षक श्रेणी में कु. मीनाक्षी आर्या प्रथम, कुमारी एकता द्वितीय, कु. रोहिणी तृतीय स्थान पर रही, जिन्हें क्रमशः ताम्र, रजत, स्वर्ण पदक मान्य अतिथियों द्वारा दिये गये।

16 जून को ही गुरुकुल के संरक्षक माननीय आचार्य देवव्रत महामहिम राज्यपाल, गुजरात ने ऑनलाइन सम्बोधित किया तथा अगले वर्ष के लिये पुनः इस पुण्यभूमि में आने और प्रशिक्षण प्राप्त करने का निमन्त्रण दिया सभी आर्य वीरांगनाओं ने करतल ध्वनि से उनका स्वागत किया। गुरुकुल के मुख्य संरक्षक श्री संजीव आर्य ने दिनरात परिश्रम करके आर्य वीरांगनाओं की हर प्रकार से सहायता दी और सदा उनका मनोबल बढ़ाते रहे। उपव्यायाम शिक्षक श्रेणी, शाखानायक एवं आर्यवीर श्रेणी की प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाली वीरांगनाओं को पदक और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया।

- श्रीमती व्रतिका आर्या
प्रधान संचालिका
सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सेवा प्रकल्प–स्वास्थ्य जागरूकता अभियान के बढते कदम

मल्कागंज, एस.एम. आर्य प.स्कूल, पंजाबी बाग, सी.डी पार्क, जहांगीर पुरी, डीएवी स्कूल राहिणी में निःशुल्क स्वास्थ्य जांच

दिल्ली की समस्त आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं की नियंत्रक शिरोमणि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा राष्ट्र सेवा एवं मानव निर्माण के सैकड़ों प्रकल्प गतिशील हैं। सभा द्वारा संचालित सेवा समर्पण के इस अनुक्रम में स्वास्थ्य जागरुकता सेवा से प्रतिदिन सैकड़ों गरीब लोग लाभ प्राप्त कर रहे हैं। इस महत्वपूर्ण योजना का उद्देश्य है कि दिल्ली की उन समस्त सेवा बस्तियों में जहां निर्धन, मजदूर लोग रहते हैं, जहां पर छोटे-छोटे झुग्गी झोपड़ी हैं, साफ सफाई भी नाम मात्र के लिए ही है, वहाँ इस भीषण गर्मी के मौसम में सभा की एंबुलेंस और पूरी स्वास्थ्य जागरूकता सेवा की टीम दिल्ली में जगह-जगह पर झुग्गी बस्तियों में निशुल्क स्वास्थ्य जांच करती है, जिसमें सुगर, वी. पी., हीमोग्लोबिन, आक्सीजन, प्लस, वजन, लम्बाई की जांच कर तुरंत रिपोर्ट दी जाती है।

अभी पिछले दिनों भीषण गर्मी से परेशान निर्धन रोगियों की स्वास्थ्य जाँच हेतु आर्य समाज मलकागंज क्षेत्र में स्वास्थ्य जागरूकता सेवा शिविर का आयोजन किया गया जिसमें हर आयु वर्ग के रोगियों ने अपनी जाँच करायी और स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया। गत् वर्षों की भांति इस वर्ष भी आर्य वीरदल दिल्ली प्रदेश की प्रांतीय शिविर के आयोजन में एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग एवं आर्य वीरांगनादल दिल्ली प्रदेश के प्रांतीय शिविर डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सै. 7 रोहिणी में आर्यवीर/वीरांगनाओं के स्वास्थ्य जाँच हेतु, स्वास्थ्य जागरूकता टीम ने स्वास्थ्य जाँच शिविरों के आयोजन किये। जिससे सैकड़ों आर्यवीर वीरांगनाओं को लाभ प्राप्त हुआ। स्वास्थ्य सेवा के इस क्रम में सी. डी. पार्क जहांगीरपुरी में आयोजित स्वास्थ्य जाँच शिविर निर्धन रोगियों ने अपने स्वास्थ्य की जाँच कराई और महर्षि दयानंद और आर्य समाज के प्रति कृतज्ञता और आभार व्यक्त किया। आर्य समाज के स्वास्थ्य सेवा अभियान के कदम निरंतर आगे बढ़ते जा रहे हैं। स्वास्थ्य जागरूकता टीम एम्बुलेंस के साथ जगह-जगह निर्धन सेवा बस्तियों में जा जाकर स्वास्थ्य सेवा शिविर लगा रही है जहां निर्धनों को स्वास्थ्य लाभ हो रहा है। - सम्पादक

पुस्तक परिचय

भारत के परिवर्तन और परिवर्तन क्रांति के सत्य की गहराई और सच्चाई

जानने के लिए अवश्य पढ़ें

परिवर्तन

(परिवर्तन आता नहीं - लाया जाता है।)

-: लेखक:-

विनय आर्य, महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

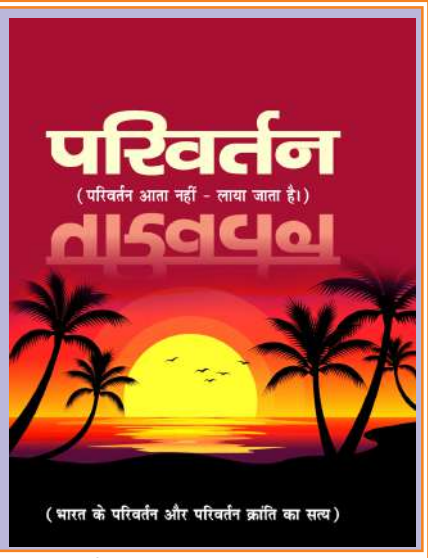

इतिहास अपने आपमें उस कठोर पत्थर की भांति है जिसके ऊपर चाहे जितनी धूल पड़ती रहे, जमती रहे, वह दिखना बन्द हो जाए, उसकी कल्पना भी कोई न कर सके कि इस मिट्टी के नीचे कोई पत्थर होगा। पर जब कोई खोजी, यह जानकर कि यहां एक मजबूत चट्टान थी और उस धूल-मिट्टी के ढेर को हटाना शुरु करेगा तो एक समय ऐसा अवश्य आएगा कि वह धूल-मिट्टी हटाकर उस चट्टान को खोज लेगा। काले बादलों के आ जाने पर सूरज की रोशनी कुछ समय के लिए कम हो जाती है, पर समाप्त नहीं होती। ठीक वही स्थिति ऋषि दयानन्द के जीवन, उनके कार्यों और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज के कार्यों को लेकर भी रही। इतिहास लेखकों द्वारा या खासकर पाठ्य पुस्तकों में उनके जीवन-कार्यों को जिस तहर सम्मान/स्थान दिया जाना चाहिए था, वह कभी नहीं मिल पाया, जिसके चलते एक बड़ा वर्ग उस जानकारी से वंचित रहा और एक वर्ग ने उनकी कुछ बातों को नकारात्मक रूप में बताने के लिए भरपूर प्रयत्न किया, परन्तु उन जैसे महान् तेजस्वी व्यक्तित्व का जिस प्रकार से परिचय समस्त मानव जाति के कल्याणार्थ होना चाहिए था, वह नहीं हो सका। उनके शिष्यों ने अपनी पूरी शक्ति उनके आदेशानुसार किए जाने वाले कार्यों में झोंकी, परन्तु प्रचार में वे कहीं पीछे ही रहे।

समय कभी-कभी अपने आप अवसर प्रदान करता है। उस महान् ऋषिवर की 200वीं जयन्ती शायद ऐसा ही अवसर है। आने वाला समय हमारी प्रतीक्षा कर रहा है, समय के साथ-साथ चुनौतियां भी। अत: उनका सामना हम बेहतर तरीके से कर सकें, इसके लिए जरूरी है कि हम कुछ समय अपने अतीत में जाएं और विचारपूर्वक सोचें कि आने वाले समय की चुनौतियां, क्या 150 वर्ष पूर्व की चुनौतियों से ज्यादा हैं, तो हमें उत्तर मिलेगा, शायद नहीं, ऋषि दयानन्द जी के जीवन/ कार्यों और दर्शन को समझने से पूर्व हमें इतिहास पर दृष्टि डालनी होगी। प्रस्तुत पुस्तक में इन सारे विषयों पर हम पांच चरणों में विचार करेंगे-

सृष्टि के आरम्भ से

पहला-आदि सृष्टि (सृष्टि के आरम्भ से) महाभारत के युद्ध से पूर्व का गौरवकाल (5000 वर्ष पूर्व तक)

दूसरा- महाभारत के युद्ध से कुछ समय पूर्व बनी परिस्थितियां एवं महा भारत के युद्ध के परिणाम।

तीसरा- महाभारत के पश्चात् से 18वीं और 19वीं सदी तक का भारत।

चौथा- महर्षि दयानन्द जी के समय की परिस्थितियां और उनके द्वारा किया गया परिवर्तनकारी कार्य।

पांचवां- वर्तमान युग की उन चुनौतियों/समस्याओं की चर्चा और समाधान के तत्व जो हमारे मूल अस्तित्व को पूरी तरह समाप्त करने को तैयार हैं।

पुस्तक के अन्त में विशेष परिशिष्ट भी दिए गए हैं, जो विषय के विस्तार में सहायक होंगे-

(1) महर्षि द्वारा स्थापित आर्यसमाज का विश्व में फैला वर्तमान संगठन और सेवा कार्य।

(2) महर्षि दयानन्द के शिष्यों की श्रृंखला का संक्षिप्त परिचय।

देश-धर्म के समक्ष खड़ी असली चुनौतियों के विरुद्ध

आर्य समाज का शँखनाद

अपने और भावी पीढ़ी के भविष्य को बचाने के लिए इन 6 पुस्तकों को अवश्य पढ़ें

vedicprakashan.com 95400 40339

पुस्तक घर बैठे/ऑनलाइन प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें

www.vedicprakashan.com

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

मो. 09540040339, 011-23360150

आर्य समाजों की विभिन्न गतिविधियों से सम्बन्धित रजिस्टर उपलब्ध हैं

- आर्य समाज सदस्यता रजिस्टर
- आर्य समाज सदस्यता शुल्क (चन्दा) रजिस्टर
- भवन आरक्षण रजिस्टर
- आर्य वीर दल रजिस्टर
- आर्य वीरांगना दल रजिस्टर
- संस्कार (पुरोहित रजिस्टर)
- आर्य युवा महिला मिलन सदस्यता रजिस्टर
- आर्य बाल वाटिका रजिस्टर
- आर्य कुमार सभा रजिस्टर
- रसीद बुक रजिस्टर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

सम्पर्क सूत्र : 9540040339

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ

के अन्तर्गत अखिल भारतीय स्तर पर

आर्य समाज द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न सेवा प्रकल्पों की श्रृंखला में

बालवाड़ी प्रकल्प अथवा शिक्षा केंद्र में शिक्षक बनने क सुनहरा अवसर

बालवाड़ी प्रकल्प/शिक्षा केंद्र में अध्यापक बनने हेतु आवश्यक योग्यताएं

आयु 18 वर्ष से अधिक

न्यूनतम 12वीं पास

अध्यापन कार्य में रुचि

अपने गाँव/बस्ती में नयी बालवाड़ी/शिक्षा केंद्र शुरू करने हेतु निम्नलिखित लिंक पर फॉर्म भरें या QR Code स्कैन करें

bit.ly/balwadiapply

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : 9311413920

(सन् 1870 से 1875 तक)

साप्ताहिक स्वाध्याय

बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना

गतांक से आगे -

महर्षि दयानन्द का सुधार सम्बन्धी कार्यक्रम सर्वांग-सम्पन्न होकर जनता के सामने आ गया। महर्षि जी ने अपने कार्य को वैष्णव सम्प्रदाय के खण्डन से प्रारम्भ किया था। धीरे-धीरे उनका खण्डनास्त्र सारे पौराणिक मतों पर व्याप गया। वह सुधार की दूसरी दशा थी। ज्यों-ज्यों वैदिक धर्म का रूप अन्य सब मतों की अपेक्षा उज्ज्वल दिखाई देने लगा, त्यों-त्यों अन्य सब धर्माचार्यों का अपनी रक्षा के लिए यत्न भी जारी हो गया। ईसाई और मुसलमान अपने सम्प्रदाय की रक्षा के लिए चेष्टा करने लगे। इसी में महर्षि जी का मौलवियों और पादरियों से भी संघर्ष उत्पन्न हो गया। महर्षि जी ने सब मतों और सम्प्रदायों का खण्डन कर वैदिक धर्म को स्थापित करना आरम्भ कर दिया। इस प्रकार महर्षि जी का कार्यक्रम पूरा हो गया।

महर्षि जी ने ईसाइयत और इस्लाम का जो खण्डन प्रारम्भ कर दिया, इस बात के दो निमित्त बताए जा सकते हैं। एक निमित्त तो यह कि महर्षि जी उस समय की आर्यजाति पर इन दो मतों से उत्पन्न होने वाले खतरे को देख रहे थे। महर्षि जी ने देखा कि हिन्दुओं को ईसाई और मुसलमान कवलित कर रहे हैं। आर्यजाति जिसे दुर्भाग्य से हिन्दूजाति का नाम भी दिया गया था, पादरियों और मौलवियों के धावों के सामने डांवाडोल हो रही थी। महर्षि जी आर्यजाति के रक्षक बने और ईसाइयत तथा इस्लाम की बाढ़ को रोकने का यत्न करने लगे।

एक दूसरे प्रकार से भी इसी बात को समझाया जा सकता है। महर्षि जी मनुष्य मात्र के हितैषी थे। वह चाहते थे कि हिन्दू हो या बौद्ध, ईसाई हो या मुसलमान, भारतवासी हो या विदेशी मनुष्य मात्र वैदिक धर्म को स्वीकार करे। अन्य धर्मावलम्बियों को धर्म-सम्बन्धी भ्रान्तियों में से निकालने के लिए ही महर्षि जी ने खण्डन का कार्य आरम्भ किया था। खण्डन का उद्देश्य आर्य जाति की रक्षा नहीं, अपितु अन्य मतवादियों का खण्डन ही था। कार्य एक था- दो व्याख्याओं के अनुसार उस पर भिन्न-भिन्न प्रकार का प्रकाश पड़ता है। इसी विषय पर पूरा विचार तो हम एक अलग परिच्छेद में करेंगे, यहां केवल इतना विचारणीय है कि सुधार की दूसरी और तीसरी दशाओं में जो भेद था, उसका निमित्त महर्षि जी का केवल आर्यजाति के प्रति प्रेम था या मनुष्यमात्र के प्रति प्रेम? यदि ईसाइयों और मुसलमानों का खण्डन केवल आर्यजाति को उनके आक्रमणों से बचाने के लिए ही था तो खण्डन का निमित्त केवल आर्यजाति के प्रति प्रेम होगा, परन्तु यदि खण्डन का निमित्त ईसाई-मुसलमानों को वैदिक-धर्मी बनाना था तो निमित्त मनुष्य-प्रेम होगा।

लेखक की सम्मति है कि महर्षि जी ने दोनों ही निमित्तों से ईसाइयों तथा मुसलमानों का खण्डन किया। उन्हें मनुष्य मात्र से प्रेम था, परन्तु आर्य-जाति से विशेष प्रेम था। उस प्रेम का केवल यह कारण नहीं था कि वह आर्य जाति में उत्पन्न हुए थे; यह भी कारण था कि वह आर्य जाति को शेष सब जातियों की अपेक्षा सत्य के अधिक पास समझते थे। वेद धर्म का स्रोत है, और केवल आर्य जाति ही है जो वेदों को प्रामाणिक मानती है। जिन आर्ष ग्रन्थों से महर्षि जी वेद के आशय को ढूंढते थे, उनका खजाना भी आर्य जाति के ही पास था। वैदिक संस्कार, वैदिक ज्ञान, वैदिक धर्म-सबके अवशेष यदि कहीं थे, तो आर्यजाति में थे। इस कारण स्पष्ट है कि जहां आर्यजाति को शुद्ध वैदिक धर्म पर लाने के लिए केवल सुधार की आवश्यकता थी, वहां ईसाइयत और इस्लाम का मूलसहित परिवर्तन किये बिना वैदिक धर्म के लिए स्थान नहीं निकाला जा सकता था। एक जगह केवल काट-छांट चाहिए तो दूसरी जगह उखाड़ना भी आवश्यक था। आर्यजाति की रक्षा और सुधारणा आवश्यक थी, परन्तु अन्य मतवादों का रूप परिवर्तन अभीष्ट था। महर्षि जी ने आर्यजाति की रक्षा और सुधारणा करते हुए ईसाइयत और इस्लाम को रास्ता रोके खड़ा पाया। वे धर्म आर्यजाति की सत्ता को नष्ट करने की धमकी दे रहे थे। आर्यजाति को सुधारकर, शुद्ध वैदिक बनाकर, संसार की भलाई का साधन बनना चाहते थे। आर्यजाति के लिए भयानक समझकर आर्यजाति के रक्षक ने ईसाइयत और इस्लाम पर प्रत्याक्रमण किये। इससे मनुष्यमात्र का भला ही अभीष्ट था। प्रथम तो महर्षि जी समझते थे कि यदि आर्य जाति के विचारों का पूरा सुधार हो जाय

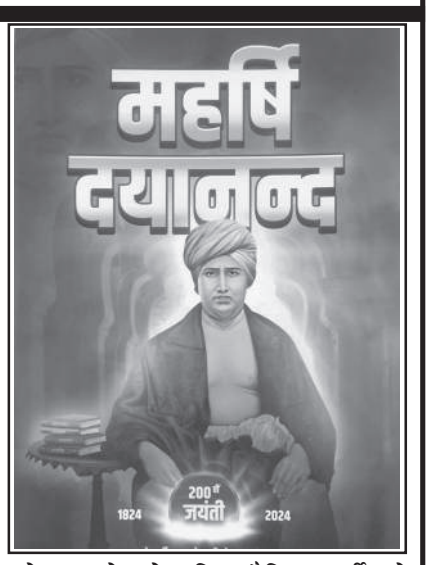

तो 23 करोड़ से अधिक वैदिक-धर्मी सारे संसार को सच्चे धर्म की शरण में ला सकते हैं। वह देखते थे कि आर्यजाति के अधूरे वैदिक धर्मी अन्य प्रभावों में आकर बिल्कुल अवैदिक और अनार्य बन रहे हैं। मनुष्यजाति की भलाई इसी में थी कि आर्यजाति अपने रूप को समझकर संसार को शुद्ध धर्म का प्रकाश दे सके। दूसरे, महर्षि जी चाहते थे कि अपने-अपने मतों की निर्बलताएं देखकर ईसाई, मुसलमान आदि वैदिक धर्म की शरण में आ सकें। महर्षि जी का आर्यजाति के प्रति पक्षपात था, परन्तु वह गुणों का पक्षपात था।

- क्रमशः

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200वीं जयन्ती पर पुनःप्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑनलाइन www.vedicprakashan.com पर अथवा 9540040339 पर आर्डर करें

Continue From Last Issue

Establishing Arya Samaj in Mumbai

Reform work done by Swamiji in full swing was completely known to the general public. Swami ji had started his work condemning Vaishnav religions. But started condemning all other Panrasik religions also with passage of time. That was second stage of reform. As the people started feeling that Vedic Dharm was for better than all other religions, all the Dharmacharyas of other religions started preparation for safety of true religions, Christians and Muslims also tried to defend their religion. Then a struggle started between Muslims and Priests on one side and Swami Ji on the other side. Swamiji tried to establish truth of Vaidik Dharm condemning all other religions. Thus he completed his work of reform.

Swamiji condemned Christianity and Islam for two reasons. Firstly he had judged the danger of these two for Arya religions. He observed that Christians and Muslims wery performing work of conversion of Hindus. It was bad luck that Arya community was also named as Hindu community. Arya community was getting weaker by religious attack by Muslims and Christians. Swamiji proved to be the safe guard of Arya Society and tried to stop the sunami of Christianity and Islam.

The above matter can be understood in another way. Swamiji was well whisher of whole humanity. He wanted that all the human beings of Bharat and the word should adopt Arya Dharm. They may be Hindus, Muslims, Christians, Budhists or believers of some other religion. Swamiji started the work of condemning so that believers of other religion should get rid of the misconception regarding Dharm. Aim of condemning was not only saving Arya community, but it was for condemning religions of other communities. The work was the same, but working from two different angles it seems to be different type. We will discuss this topic in another chapter completely. Here it is we are to decide whether the difference between the type of reform in second and third stage was due to love for Arya community only or for whole humanity? If the condemning of Christians and Muslims was only for safety of Arya community, it would be called love for Arya community. But it was to convert Muslims and Christians to Vedic Dharmi, it would be considered love for whole humanity.

The author of the book thinks that Swami Ji condemned Christianity and Islam for both the purposes. he loved whole humanity, but he had special love for Arya community. The only reason of that was not that he was born in Arya community, but it was because he considered Arya community more near truth than other communities. Vedas are source of Dharm and only Arya community considers Vedas as real (true). The Arsha books, from where Swamiji wished to find meaning of Vedas treasure was also with Arya community only. Remains of Vedic Sanskars, Vedic knowledge, Vedic Dharm were only with Arya community. The reason is clear where as Arya community needed some reform only, for coming back to adopt pure Vedic Dharm, it was not possible to find place for Christians and Muslims in Vedic Dharm without bringing complete reform in their religion. Only little reform or change is needed on one side where as complete change was expected on the other side. While doing work of reform in Arya community he found Christianity and Islam as great hurdle. They were bound to finish the existence of Arya community. Swami Ji wanted to make Arya community work for welfare of whole humanity by bringing reform and by making it pure Vedic community. Swami Ji attacked (criticized) Christianity and Islam as he considered both as very dangerous for Arya community, it's purpose was welfare of human community. Swami Ji had drawn conclusion that if there is complete reform in ideas of Arya community, more than 23 crores of Vedic Dharm can bring all the word under the shelter of true Vedic Dharm. He observed that incomplete Vedic Dharmi were being attracted under the influence of other religions and were becoming unarya and unvedic. It was for the safety of humanity that Vedic community should realise it's real swaroop and give them real light of true Dharm. He also wanted that Muslims and Christians should be aware of draw backs of their religions and come under the shelter of Vedic Dharm. In a way it was discrimination regarding Arya community but Partiality it that was due to best qualities of character among them.

To be Continue.....

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji.To buy online login www.vedicprakashan.com or contact 9540040339

पृष्ठ 2 का शेष

बेटे की चाहत : अंधविश्वास, ...

आप किसी से भी पूछिए कि आखिर लड़का होना क्यों जरूरी है? तो इस प्रश्न के ये जबाब कुछ यूँ मिलेंगे कि साहब लड़के से ही वंश चलता है, लड़का बुढ़ापे का सहारा होता है, लड़की तो पराई होती है आदि-आदि रटे रटाये जवाब मिलते हैं। जबकि हमने वो परिवार भी देखे हैं जहाँ लड़के की चाहत में 6 लड़कियां पैदा की बाद में एक लड़का हुआ लेकिन वह लड़का आज नशे, चोरी आदि में लिप्त है। और उन बूढ़े माँ-बाप की देखभाल वो बेटियाँ ही कर रही हैं।

किसके यहाँ लड़का पैदा होगा और किसके यहाँ लड़की, इसका निर्धारण हमारे वश में नहीं है। न ही इस बात की कोई गारन्टी है कि जिसके यहाँ बेटा है उसकी जिन्दगी सुखी है और बेटी वाला दु:खी है। जो चीज हमारे वश में न हो उसके लिए कभी विचार नहीं करना चाहिए और जो प्रकृति से हमें मिला है उसका उपकार मानना चाहिए।

इस देश में पिछले 50-60 सालों में उच्च वर्ग से लेकर मध्य वर्ग के व्यक्तियों ने लाखों लड़कियों को जन्म से पहले ही मार दिया, यह आंकड़ा बहुत ही न्यूनतम बताया है। अगर सही आंकड़े का पता चल गया तो ऐसे उछलोगे कि सिर छत से जा टकराएगा, इतना तो तब है जब स्त्री के गर्भ में पल रहे बच्चे के भ्रूण की जाँच कराना दंडनीय अपराध है, इस किस्म के अल्ट्रासाउंड पर बैन है, मगर बताया जाता है कि अभी भी चोरी छिपे सब चलता है। इस देश में, कई बार खूब छापेमारी की खबरें भी आई हैं ऐसी लैबस की, जो भ्रूर्ण की जाँच में संलिप्त पाई गई, बोर्ड सबने लगाया हुआ है, हम भ्रूर्ण की जाँच नहीं करते लेकिन चोरीछिपे करते तो हैं।

हर किसी को पुत्र चाहिए जबकि ऐसा कोई काम नहीं जो पुत्र कर सके और पुत्री नहीं। आखिर हैं तो दोनों एक ही माता-पिता की संतान। पर यह समझाया जाता है कि बेटे पर अपने उन पितरों का ऋण है जो उसे इस दुनिया में लाए थे। यह भी कि यह ऋण उतारना उसकी नैतिक जिम्मेदारी है, वरना उसके पूर्वजों की अतृप्त आत्माएं भटकती रहेंगी। मगर पुत्र ही क्यों? पुत्रियां भी तो इन्हीं पूर्वजों द्वारा संसार में लाई गई हैं? तो पितृऋण तो उस पर भी होना चाहिए? अंधविश्वास ने मृत्यु के बाद का एक काल्पनिक संसार रच दिया है। जबकि इस देश में बहुतेरे ऋषि, मुनि, धर्मज्ञाता ऐसे भी हुए हैं जिनको संतान नहीं थी जो आजीवन ब्रह्मचारी रहे क्या वे सब मोक्ष के अधिकारी नहीं हैं?

लेकिन फिर भी पुत्र पैदा करने के लिए मानसिक दबाव बनाया जाता है। जिस कारण कोई महिला तांत्रिकों की हवस शिकार बनती है, तो कोई बेटियों की हत्या कर रहा है। कोई बलि दे रहा है। 'शर्तिया बेटा ही पैदा होगा'- हजारों - करोड़ का अंधविश्वास का बाजार खड़ा हो गया है, मुल्ला-मौलवी, तांत्रिक, ओझा, बाबा, पीर-फकीर, मजार सब लड़का पैदा करने के दावे कर रहे हैं। क्योंकि जब समाज में अंधविश्वास पैदा हो जाये, हर कोई उससे अपनी पूर्ति करना चाहता है। आज दो मासूम बेटियों को उसके बाप ने कत्ल किया, कल कोई दूसरा इस अपराध को अंजाम देता दिखाई देगा।

हमारी, आपकी और हम सबकी नैतिक जिम्मेदारी है कि हम महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 150वर्ष पूर्व दिए आदेश का पालन करें, जिसे आज की सरकार - बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ के नारे के साथ आगे बढ़ा रही है। हमें उस सोच को आगे बढ़ना है, समाज में जागरूकता पैदा करनी है कि बेटा भले ही पिण्डदान करके किसी को मोक्ष प्राप्त कराए-न कराए, किन्तु बेटियां एक नहीं दो परिवारों बल्कि इससे आगे बढ़कर दो पीढ़ियों में जीवनदायिनी शक्ति का संचार करती हैं। पितृ ऋणसे भले ही उऋण हो जाएं किन्तु बेटियों का ऋण से हम उऋण नहीं हो सकते।

- ***सम्पादक***

प्रथम पृष्ठ का शेष

आर्यवीर दल का शिविर सम्पन्न

दयानन्द जन्म द्विशताब्दी वर्ष में सार्वदेशिक आर्यवीर दल का राष्ट्रीय शिविर के संपन्न हुआ। सार्वदेशिक आर्यवीर दल व्यास के अध्यक्ष आचार्य स्वामी देवव्रत सरस्वती की अध्यक्षता में शाखानायक उपव्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक श्रेणी को शारीरिक और बौदिक प्रशिक्षण सुयोग्य शिक्षकों द्वारा दिया गया। जिसमें 24 व्यायाम शिक्षक, 55 उप व्यायाम शिक्षक, 60 शाखा नायकों सहित सैकड़ो आर्यवीरों ने भाग लिया। आचार्य ऋषिपाल जी ने भोजन एवं आवास की उत्तम व्यवस्था की जिसके कारण भीषण गर्मी में भी कोई आर्यवीर अस्वस्थ नहीं हुआ।

आर्यवीर दल हरियाणा के सह संचालक, श्री आचार्य सन्दीप जी ने भी आर्यवीरों का मार्गदर्शन किया।

दीक्षान्त के पश्चात् आर्यवीरों द्वारा आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन की प्रस्तुति दी गई। पथ संचालन सर्वांग, सुन्दर व्यायाम, नमस्कार व्यायाम, दण्ड संचालन, संगीत लहरी के साथ त्रिशूल संचालन, तलवार बाजी, आसनों के स्तूप और व्यायाम शिक्षकों द्वारा पट्टा के प्रदर्शन ने सभी को भावविभोर कर दिया। शिविर को सफल बनाने के लिये श्री देशबन्धु आर्य, होती लाल आर्य, संजय आर्य एवं फरीदाबाद आर्यवीर दल के मण्डलाधिपति ब राजसिंह जी ने भी पूरा योगदान किया। अन्त में सम्मेलन के अध्यक्ष स्वामी देवव्रत

16 जून को प्रात: यज्ञोपरान्त दीक्षान्त समारोह का आरंभ हुआ, जिसमें आचार्य स्वामी देवव्रत सरस्वती ने आर्यवीरों को शपथ ग्रहण कराई। इस अवसर आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली प्रदेश के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने अपने उद्बोधन में वर्तमान परिस्थितियों में आर्यवीरों को कर्त्तव्य है समझाते हुए भावी कार्यक्रम की योजना प्रस्तुत की। सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान संचालक श्री सत्यवीर आर्य ने आह्वान किया कि सन् 2025 में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में अधिकाधिक युवक सम्मिलित होवें। सरस्वती ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा एवं गुरुकुल की प्रबन्ध समिति का धन्यवाद किया और आर्यवीरों को जाकर शाखा संचालन, वृक्षारोपण एवं प्रतिदिन, संध्या, व्यायाम, स्वाध्याय तथा पढ़ने में ध्यान का आह्वान किया। ध्वजावतरण के पश्चात् शिविर समाप्ति की घोषणा की गई। प्रशिक्षण, भोजन, आवास की समुचित सुव्यवस्था रही प्रेम सौहार्द के वातावरण में यह रचनात्मक शिविर संपन्न हुआ, जिसमें 13 प्रान्तों के आर्यवीर सामिल हुए।

- ***कृष्णपाल आर्य,***
मंत्री, सार्वदेशिक आर्यवीर दल

आर्थिक रूप से कमजोर बारहवीं पास छात्रों
के आगे की पढ़ाई के लिए छात्रवृति योजना

आर्य प्रगति छात्रवृत्ति परीक्षा 2024

- पात्रता: आवेदन प्राप्ति की अंतिम तिथि तक बारहवीं कक्षा या समकक्ष कक्षा में उत्तीर्ण होना अनिवार्य है।
- आयु सीमा: आवदेन की अंतिम तिथि तक 16 से 25 वर्ष ।
- छात्रवृत्ति हेतु अभ्यर्थियों का लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार के आधार पर चयन किया जाएगा।
- पात्रता परीक्षा ऑनलाइन वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के माध्यम से ली जाएगी।
- पात्रता परीक्षा का विषय सामान्य ज्ञान और रिजनिंग पर आधारित होगा।

आवेदन की अंतिम तिथि 15 जुलाई 2024
ऑनलाइन परीक्षा तिथि 21 जुलाई 2024 11:00 AM IST

आवेदन करने के लिए वेबसाइट www.aryapragati.com

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:
9311721172
E-mail: dss.pratibha@gmail.com

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि:' अर्थात् यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए ***मो.नं. 9650183335 पर*** सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की वैदिक रीति से व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं।

- ***संयोजक***

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 1 जुलाई, 2024 से रविवार 7 जुलाई, 2024

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 4-5-6/07/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 3, जुलाई, 2024

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर दस लाख रुपये की पुरस्कार प्रतियोगिता

कॉमिक्स पढ़ें और जीतें लाखों के ईनाम

प्रतिष्ठा में,

प्रथम पुरस्कार : 1 लाख रुपये एवं विशेष उपहार।
द्वितीय पुरस्कार : 51 हजार एवं विशेष उपहार (2)
तृतीय पुरस्कार : 31 हजार एवं विशेष उपहार (3)
चतुर्थ पुरस्कार : 5100/- एवं विशेष उपहार (25)
पांचवा पुरस्कार : नकद 2100/- रुपये (100)
छठा पुरस्कार : नकद 1000/- रुपये (250)
सातवां पुरस्कार : नकद 500/- रुपये (250)

प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार विजेता के विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार

सर्वाधिक प्रतियोगिता सहभागी वाले विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार

नियम व शर्तें -

1. इस प्रतियोगिता में अधिकतम 18 वर्ष तक की आयु के विद्यार्थी भाग ले सकते हैं। सभी प्रश्नोत्तर इसी कॉमिक पुस्तिका में हैं।

2. उत्तर पत्र पूर्ण रूप से भरकर दिए गए कॉलम में अपना व विद्यालय का पूरा नाम व पता (पिन कोड सहित), फोन नम्बर, आयु, अवश्य भरें तथा पते के अन्त में राज्य का नाम अवश्य लिखें। (यदि विद्यालय के माध्यम से भाग न ले रहे हों तो सम्बन्धित संस्था का नाम अवश्य भरें। जैसे गुरुकुल, आर्य समाज, आर्यवीर दल की शाखा आदि।)

3. प्रश्नपत्र को भरकर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली 110001'** के पते पर (प्रश्नोत्तरी को फोल्ड करके लिफाफे में) भेजें अथवा विद्यालय/संस्था की ओर से सभी प्रश्न उत्तर के साथ कॉमिक एकत्रित करके भी भेजे जा सकते हैं।

4. दिनांक **1 सितम्बर 2025** से पूर्व प्राप्त होने वाले उत्तर पत्र ही प्रतियोगिता में सम्मिलित होंगे। यह तिथि आगे बढ़ाने का अधिकार संयोजक का होगा।

5. उत्तर पत्रों की पूर्ण जांच के पश्चात् सभी ठीक उत्तर वाले पत्रों को पुरस्कार योजना में सम्मिलित किया जाएगा। पुरस्कार संयोजक समिति द्वारा बनाई गई तीन सदस्यीय निर्णायक समिति द्वारा अन्तिम रूप से घोषित किया जाएगा।

6. निर्णायकों की समिति का निर्णय अन्तिम व मान्य होगा तथा उसे कहीं भी चुनौती नहीं दी जा सकेगी।

7. पुरस्कृत/विजेता बच्चों के नाम दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **'साप्ताहिक आर्यसन्देश'** में दिए जायेंगे तथा पृथक पत्र द्वारा सूचित किया जाएगा एवं बच्चों के नाम सभा द्वारा संचालित वेबसाइट **www.thearyasamaj.org** पर प्रदर्शित किये जायेंगे।

8. सभी पुरस्कार **'अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2025'** में दिल्ली के अवसर पर प्रदान किए जायेंगे जिसकी सूचना विजेताओं को अग्रिम भेजी जाएगी। यह योजना हिन्दी तथा अन्य भाषाओं की कॉमिक पर समान रूप से लागू होगी।

9. इस कॉमिक को सुरक्षित रखें क्योकि प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार लेने हेतु कॉमिक की प्रति लाना / भेजना अनिवार्य होगा। - ***संयोजक***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह